भारतीय चिन्तन और दलित समस्या

ममता देवी
हिन्दी–विभाग
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

सम्पूर्ण प्रकति द्वारा पृथ्वी पर सुन्दरतम् स्वरूप की संरचना की गई है। मानव प्रकृति की अद्भूत रचना माना जाता है और प्रकृति ने सम्पूर्ण सुन्दर स्वरूप की रचना मानव के लिए ही की है । ऐसा प्रतीत होता है कि मानव में चेतना का होना और इस चेतना द्वारा सुन्दरता को परखना व अभिव्यक्ति करना एक महत्वपूर्ण गुण है। प्रकृति से प्रेरित होकर मानव ने विभिन्न प्रकार की कलाओं का निर्माण किया है। यें कलाएं ही समय–समय पर आत्मिक आनन्द की अनुभूति करवाती हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर ही वह अपनी सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति और अपना सर्वांगीण विकास करता है। परन्तु उनका विकास तब सम्भव नहीं हो पाता जब उसको उपेक्षित समझा जाता है। अर्थात उसको जाति, क्षेत्र, कुल, वर्ण, धर्म के आधार पर उपेक्षित समझकर उसका अनादर किया जाता है। उसकी मानसिक स्थिति को तारतार कर उसके मनोबल को कदम–कदम रोंदने का प्रयास किया जाता है। प्राचीन काल से समाज वर्गो में बंटा हुआ है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। शूद्र के स्थान पर दलित शब्द का प्रयोग किया जाता हैं। ''जिसका अर्थ– जिसका दलन, शोषण और उत्पीड़न किया गया हो।''[1] सामान्यतः 'दलित' का अर्थ है मानवीय अधिकारों से वंचित, सामाजिक तौर पर नकारा गया हो ।[2]

'दलित' शब्द का अर्थ – 'दबाया गया', 'सताया गया', 'गिराया गया', उपेक्षित, शोषित, पीड़ित, दमित, अपमानित, बहिष्कृत आदि है। ''[3]

प्रगतिवादी विचारधारा के आगमन के साथ ही दलित शब्द से उस वर्ग को सम्बोधित किया गया। ''जो आर्थिक दृष्टि से दबा, कुचला और शोषित है। ''[4]

महात्मा गांधी को दीन दलित जनता का त्राता कहकर, सम्बोधित किया गया है। किन्तु उन्होनें दलित शब्द के स्थान पर 'हरिजन' शब्द का व्यवहारिक प्रयोग किया ।[5]

डॉ. भीम राव अम्बेडकर के अनुसार –''दलित जातियॉ वे हैं जो अपवित्र होती हैं, जिनमें निम्न श्रेणी के कारीगर, धोबी, मोची, भंगी, सेवक जातियां जैसे महार, चमार, डंगारी मेरे पशु उठाने वाले), दायमा खटिक (प्रसूति कार्य के लिए) ढोल पल्ली बजाने वाले आते हैं। ''[6]

---

[1] प्रज्ञा साहित्यः दलित चेतना विशेषांक, पृ0 22
[2] वही, पृ0 24
[3] माता प्रसाद, दलित साहित्य में प्रमुख विधाएं, पृ0 5
[4] डॉ0 आनन्द वास्कर, हिन्दी साहित्य में दलित चेतना, पृ0 18
[5] अनीता सिंह, दलित चेतना और हिन्दी साहित्य पृ0 3

दलित समाज को इन संकीर्ण विचारों से मुक्ति दिलाने के लिए अनेक विद्वानों ने अपने विचारों के आधार पर समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास किया है । आज दलित सहित्य में भी विभिन्न साहित्यकारों ने अपना योगदान दिया है। अत्याधिक सहन करना भी कायरता होती है। अपने सुप्त पड़ी अर्थात् मृतक सोच को जागृत करना होगा अपने लिए, नहीं तो अपने आने वाली पीड़ियों के संघर्ष जारी रखना होगा। क्योंकि संघर्ष के बिना कोई भी कार्य सम्भव नहीं हैं । विभिन्न विद्वान – डॉ0 भीम राव अम्बेडकर, राजामोहन राय, दयानन्द सरस्वती, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, ज्योतिबा फुले, महात्मा गांधी, महात्मा बुध, सन्त कबीर, रैदास तथा अनेक साहित्यकारों नें इस सुधारात्मक यज्ञ में अपनी – अपनी अदभूत वैचारिक आहुतियॉ डाली है। जिसके आधार पर समाज के परिवर्तित रूप की कल्पना कर पाना सम्भव हुआ।

न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द राणाडे के अनुसार – ''सच्चा सुधारक कोरे स्लेट पर नहीं लिखता। जो वाक्य आधा – अधूरा रह चुका है उसे बार – बार पूर्ण करते जाना, यही उसका काम होता है । यथार्थ और यथार्थ की सहायता से ही उसे आदर्श का निर्माण करना पड़ता है।''[7]

डॉ0 बाबा भीमराव अम्बेडकर एक महान युगपुरूष थे । जिन महापुरूषों ने तथा नेताओं ने समाज को नई दिशा तथा नया मोड़ देने का प्रयत्न किया है । उन महापुरूषों नेताओं की सूची में डॉ0 भीमराव अम्बेडकर को अब इतिहास ने ही सम्मानपूर्ण स्थान दिया है।

भविष्य की पीढ़ियां उनकी ओर एक महामानव के रूप में ही देखेंगी । डॉ0 अम्बेड़कर ने जाति तथा वर्ण व्यवस्था तोड़ने का सर्वाधिक उतम मार्ग आन्तरजतीय विवाह बतलाया।

महर्षि दयान्नद सरस्वती ने भी इसी बात का आग्रह किया । 'प्राचीन भारतीय संस्कृति में वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत जातियों – उपजातियों में विभाजित समाज में सवर्णो के द्वारा दलितों का अमानवीय उत्पीड़न होता रहा । शोषण दोहन की वह प्रक्रिया सदियों तक चलती रही और समाज भी दलितों की आबादी का एक बहुत बड़ा हिस्सा अपनी समाजिक अस्मिता के लिए संघर्ष कर रहा है।[8]

उन्होनें 31 जनवरी 1928 को 'मूक नायक' नामक मराठी पाक्षित पत्र आरम्भ किया। मूक नायक में उन्होनें दलितों की सामाजिक स्वतंत्रता तथा समानता की जोरदार वकालत जिसने की। इनके दर्द को बिल्कुल करीब देखा वो डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जी थे । उनका जन्म सामान्य परिवार में हुआ। विषमता अन्याय एवं सवर्णो द्वारा किये गये अन्यायों को जाति वर्ग एवं व्यक्तिगत स्तर पर सहन करते हुए अपमान जनक स्थितियों को झेलते हुए बड़े हुए, उच्च शिक्षा प्राप्त की । 4 जून 1913 को अमेरिका के कोलम्बिया विश्व विद्यालय में उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु बड़ौदा के महाराज शिवाजी राव गायकवाड़ के द्वारा तीन सवर्ण छात्रों के साथ एक अनुबन्ध के अन्तर्गत भेजे गये । उस समय दलितों को प्याऊ के पास जाकर पानी पीने,

[6] डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, हू वर दी शुद्राज, पृ0 3
[7] डॉ0 जर्नादन वाघमारे, दलित सहित्य की वैचारिक पृष्ठभुमि, पृ0 3
[8] डॉ0 एम0 फिरोजखान, दलित विमर्श और हम

मन्दिर में प्रवेश तथा स्कूल में शिक्षा प्राप्ति आदि सभी प्रकार के कृत्यों की मनाही थी। अछूतोद्धार आन्दोलन की शुरूआत 20 जुलाई 1924 को 'बहिष्कृत हित्कारिणी सभा' की स्थापना बम्बई में की । डॉ0 अम्बेडकर ने इसका रजिस्ट्रेशन कराया और इसे सक्रिय रूप दिया । जिसके लिए वह संघर्श करते रहे । उन्हें कक्षा में सबसे पीछे बैठना पड़ता था । पीने के लिए पानी भी नहीं दिया जाता था । एक संस्कृत के अध्यापक को उसके लगन और कर्मठ व्यवहार ने अधिक प्रभावित किया जिसने अपने नाम से भीमराव को अम्बेडकर कह पुकारा जाने लगा । उन्होंने शिक्षा के बल पर ही समाज की कुरीतियों, रूढिवादी विचारों को समाप्त करने का प्रयास किया । डॉ0 अम्बेडकर अपने विद्यार्थी जीवन में अमेरिका प्रवास के दौरान अश्वेतों के अधिकारों के लिए लड़ने वाले बुकर टी वाशिंगटन से प्रभावित हुए क्योंकि इस काल में अश्वेतों कों संविधान के अनुसार गोरे लोगों के समान अधिकार प्रदान किये गए । जब उच्च शिक्षा प्राप्त कर अम्बेडकर जी वापस आये उस समय पूरे देश में गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता प्राप्त की राजनीति प्रतिरोध एवं आन्दोलन की शक्ति में उभार पर थी । देश के क्रान्तिकारी सशस्त्र विद्रोह की तैयारी में लगे थे। डॉ. अम्बेडकर केवल दलितों को मुक्ति के बारे में सोच रहे थे । उनका ख्याल था कि अगर भारत स्वतंत्र भी हो गया तो भी दलित स्वतंत्रत नहीं होगा ।

उठोगे गर अपन पैरों पर
जाति को सुधारोगे
डूबती हुई कौम को
किश्ती से उबारोगे ।[9]

20 मार्च 1927 जिला कोलावा (महाराष्ट्र) में अस्पृश्यों द्वारा डॉ0 अम्बेडकर के नेतृत्व में चाम्बदार तालाब में पानी के अधिकार के लिए एक इतिहास प्रसिद्ध सत्याग्रह का आयोजन किया। इस आयोजन में सफलता तो नहीं मिली परन्तु अस्पृश्यों व अछूतों में एकता का संचार हुआ तथा डॉ0 अम्बेडकर दलितों के एक मात्र नेता बनकर उभरे । इस दौरान उन्होंने अछूतों के मन्दिर प्रवेश को लेकर आंदोलन चलाए कभी दलितों के लिए पत्र निकाले, मगर गांधी जी की नीतियों, मुस्लिम नीतियों तथा साम्यवादियों का विरोध करते रहे व एक और हिन्दू धर्म से बेहद घृणा करते थे और दलितों के लिए अन्यधर्म की तलाश करते रहे ।

''शिक्षा के अभाव में मति गई मति के अभाव में नीति गई, नीति के अभाव में गति गई, गति के अभाव में धन गया, धन के अभाव में शूद्र ह्राश हुए और गुलाम बन कर रह गए, इतना अनर्थ अकेले शिक्षा के अभाव में हुआ । ''[10]

ब्रह्मसमाज

[9] डॉ0 ललिता कौशल, हिन्दी दलित साहित्य और चिन्तन, पृ0 78
[10] डॉ0 ललिता कौशल, हिन्दी दलित साहित्य और चिन्तन, पृ0 74

भारतीय समाज में व्यापत अव्यवस्था, शिथिलता एवं विशेषाधिकारों जैसी कुरीतियों से मर्महत होकर राजा राममोहन राय ने यह आवश्यक समझा कि समाज अपनी लम्बी निंद्रा से जागकर नवीन चेतना का अनुभव करे । इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने सन् 1828 में ब्रह्मसमाज की स्थापना की । ब्रह्म समाज की स्थापना के उद्देश्य व्यापक थे । सामाजिक, राजनैतिक, सुधारवाद का आन्दोलन ब्रह्म समाज द्वारा ही आरम्भ किया गया । छुआछूत का प्रबल विरोध करते हुए इन्होंने समता के सिद्वान्त का पोषण किया । 'दलितों' को सम्मानजनक स्थान दिलाने में उनका सहाहनीय योगदान रहा ।

प्रार्थना समाज

ब्रह्मसमाज के प्रभाव से ही एक नवीन सामाजिक चिन्तन की धारा प्रस्फुटित हुई जिसे प्रार्थना समाज के रूप में 1867 में स्थापित किया गया । बम्बई में डॉ0 आत्माराम द्वारा स्थापित इस संस्था का उद्देश्य भी समाज में नवीन दृष्टिकोण उपस्थित करके समाजिक कुरीतियों का उन्मूलन करना था । इस संस्था के आनुशांषिक संगठन, 'दलित वर्ग – मिशन' ने दलितों की समस्याओं का अध्ययन किया और दलित जातियों के समुद्धार में यथेष्ट योगदान किया । अछूताद्वार ही इसका विशेष लक्ष्य था । प्रार्थना समाज का कार्य क्षेत्र महाराष्ट्र था । न्यायमूर्ति रानाडे का सम्पूर्ण चिन्तन 'दलित उत्थान' पर केन्द्रित रहा । डॉ0 आनन्द वास्कर के विचारों के आलोक में, इसे देखा जा सकता है, ''इस समाज ने अधिक विस्तार से समाज – सुधारक कार्य तो नही किया लेकिन अछूतोद्वार का कार्य प्रारम्भ किया और समाज में समता लाने या ऊंच – नीच के भेदभाव को मिटाने का प्रयास किया ।''[11]

वस्तुतः प्रार्थना समाज ने 'दलित वर्ग' के उद्धार हेतु जनसाधारण के मन में यह सन्देश पहुंचाने का प्रयास किया कि मनुष्य – मनुष्य में जाति भेद के कारण फैली हुई असमानता समाज के लिए घातक है । दलितों के प्रति उनका चिन्तन अत्यन्त सार्थक व युग –सापेक्ष था ।

आर्य समाज

'दलित समस्या' आधुनिक भारतीय चिन्तकों के समक्ष चुनौती बनकर उपस्थित थी । ठसक निदान में भारत का कल्याण सोचने वाले चिन्तकों में स्वामी दयानन्द का नाम सम्मानपूर्वक लिया जाता है । जिन्होंने 1874 में आर्य समाज की स्थापना बम्बई में की थी । आर्य समाज का उद्देश्य समाजोद्धार था किन्तु अपनी सांस्कृतिक विशालता एवं महानता के आधार पर नवीन सामाजिक चेतना निर्माण उनका प्रेय था । सत्य की पुनर्स्थापना तथा असत्य का खंडन उनका अभीष्ट रहा था । उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' स्वयं स्वीकारा है ''जो सत्य है उसको मानना और मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़ाना मुझ को अभीष्ट है ।''[12] 'दलित' हितों के पोषक होते हुए भी स्वामी दयानन्द ने दलित समस्याओं का समाधान

[11] डॉ0 आनन्द वास्कर : हिन्दी साहित्य में दलित चेतना, पृ0 54
[12] स्वामी दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश, पृ0 39

हिन्दू धर्म में खोजना चाहा । उन्होनें ऊॅच–नीच और छूआछूत को सैद्धान्तिक व शास्त्रीय आधार पर अमावीय घोषित किया ।

''स्वामी दयानन्द ने लोगों को वेदों की ओर लौट चलने की प्रेरणा दी और उन्हें यह समझाया कि ऐस सामाजिक व्यवस्था की रचना आवश्यक और हितकर है, जिसमें समानता, स्वतंत्रता न्याय एवं सन्तुलन को प्रधानता एवं विशिष्ट महत्वपुर्ण स्थान प्राप्त हो। ''[13]

इस प्रकार हम देखते है कि आधुनिक भारतीय चिन्तन के प्रमुख घटक ''आर्य समाज ने ऊंच – नीच और छूआछूत को समाप्त करने में जो भूमिका निभायी, वह बेजोड़ है ।''[14]

रामकिशन मिशन

प्राचीन व अर्वाचीन विचारों के समन्वयक स्वामी विवेकानन्द ने अपने गुरू स्वामी रामकृष्ण परमहंस के आदर्शों एवं सिद्वान्तों को व्यावहारिक रूप देने के उद्देश्य से 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना 1909 में की । स्वामी जी ईश्वर में आस्था रखने वाले सच्चे महामानव थे । राजनैतिक व सामाजिक स्तर पर वे स्वतंत्रता समानता और बन्धुत्व के समर्थक थे । दलित समस्याओं के प्रति उनका चिन्तन सार – पूर्ण था । उनके द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन के चिन्तन को इस प्रकार सार रूप में समझा सकते है – ''रामकृष्ण मिशन समता के सार्वजनिक सिद्धान्तों के आधार पर समाज सेवा के क्रियात्मक पक्ष को अनुप्रमाणित करते हुए छूआछूत व ऊंच–नीच का विरोध करने में संलग्न रहा । ''[15]

थियोसाफिकल सोसाइटी

इस सोसाइटी की स्थापना मदाम वलावत्सकी (रूसी) और कर्नल आलकाट (अमेरिकन) ने संयुक्त रूप से 1875 में अमेरिका (न्यूयार्क) में की । 1879 में स्वामी दयानन्द सरस्वती के आमन्त्रण पर ये दोनों चिन्तक भारत आये । इस बीच श्रीमती एनी वेसेन्ट इस सोसाइटी की प्रमुख कार्यकर्त्री बन गयीं जो जन्म से आयरिश थी, किन्तु भारत भूमि के प्रति उसके मन मे अपार श्रद्धा व आत्मीयता थी और वह भारत को अपनी मातृ – भूमि स्वीकार कर चुकी थी । थियोसफिकल सोसाइट की इस श्रेष्ठ मानवी ने भारतीयों की आत्मा के साथ अपने को एकाकार कर लिया था । समाज सुधार के अनेक कार्यों को सम्मान पूर्ण जीवन जीने का अधिकार दिलाने का प्रयास किया ।

महात्मा गांधी

विश्व क्षितिज पर महात्मा गांधी एक ऐसे युग पुरूष का नाम है जिसने एक साथ सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक धरातल पर अपने नेतृत्व का लोहा मानने को विश्व के जनमानस को विवश कर दिया । महात्मा गांधी ने भारत का सूक्ष्म अध्ययन किया और अनुभव किया कि भारतीय समाज व्यवस्था का एक अंग

[13] एम0 पी0 त्यागी एवं आर0 के0 रस्तोगी, भारतीय राजनीतिक विचार, अध्याय –1, पृ07
[14] डॉ0 कुसुम मेघवाल, हिन्दी उपन्यासों में दलित वर्ग, पृ0 28
[15] व्ही, पृ0 28

जिसे अस्पृश्य अथवा अछूत कहा जाता है, पीड़ित है, शोषित है, दलित है । अतः समाज के अन्य 'त्रिवर्ण' के हृदय परिवर्तन की आवश्यकता है । उन्होंने अस्पृश्यों (अछूतों) एक नये सम्मानजनक नाम 'हरिजन' से सम्बंधित किया और उनके लिए समाज में फैली हुई अस्पृश्यता की भावना को दूर करने हेतु हिन्दू जन – मानस का हदय परिवर्तन करने का प्रयास किया ।

दलित समस्या के प्रति गांधी जी पूर्णतया जागरूक चिन्तक थे । उन्होंने 'दलितों' के लिए ही 'हरिजन' पत्र प्रकाशित किया अपने को 'हरिजन सेवक' का नाम दिया । मात्र 'हरिजन सेवा' का सर्वोपरि नाम पाकर उन्होंने अपने कर्तव्यों की इति श्री नही कर ली वरन् उसके अनरूप कार्य भी किए ।

इसी अध्यात्मवादी तरीके का प्रयोग कर गांधी जी एक ऐसा समाज चाहते थे, जिसमे स्त्री – पुरूष को समान अधिकार प्राप्त हों, जहां सब प्रेम – भाव से रहें, जहां साम्प्रदायिकता और अस्पृश्यता जैसी कुरीतियॉ न हों, गांधी जी की रामराज्य की स्थापना देश के सामाजिक उत्थान की चरम सीमा है ।

अस्पृश्यता के साथ संग्राम एक धार्मिक संग्राम है, यह संग्राम मानव सम्मान की रक्षा और हिन्दू धर्म के बहुत ही शक्तिशाली सुधार के लिए आवश्यक है । गांधी की इच्छा थी कि हरिजनों को मुख्य राष्ट्रीय जीवनधारा से जोड़ा जाए । इसके लिए हर हिन्दू को हर प्रकार के त्याग के लिए तैयार रहना चाहिए । हरिजनों को अपनाना हर एक हिन्दू का कर्तव्य हो जाना चाहिए । उनके सुख – दुख में भाग लेना चाहिए । अस्पृश्यता निवारण के लिए ही 30 सितम्बर 1932 में 'हरिजन सेवक संघ' की स्थापना की । गांधी जी ने 'अस्पृश्यता निवारण' को ही अपने राजनैतिक समाजिक जीवन का 'मुख्य एजेण्डा' बना लिया ।

ज्योतिबा फुले

उन्नीसवीं शताब्दी के महान् उन्नायकों में माली जाति के और पुणे, महाराष्ट्र के ज्योतिबा फूले का नाम भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है जिन्होने पिछड़े व अछूत (दलित) लोगों के अधिकार चेतना जाग्रत कर उनके उत्थान का पथ प्रशस्त किया । महात्मा फूले ने महिला शिक्षा में पर्याप्त रूचि ली और महाराष्ट्र जो उनका कार्यक्षेत्र था, वहां प्रथम दलित महिला विद्यालय स्थापित किए ।[16]

महात्मा ज्योतिबा फुले दलितों के लिए पूर्ण समर्पित मानव थे उनका विश्वास था मनुष्य–मनुष्य के बीच जातीय आधार पर घृणा करने वाली समाज व्यवस्था अन्याय पूर्ण है और इसका विरोध होना ही चाहिए । ब्राह्मणवादी मानसिकता की पोषक 'मनुस्मृति' की उन्होंने जमकर आलोचना की । ''शिम्फी, कुम्भार, कोली, महार, माँग, माली, चम्मार आदि निम्न वर्गीय जातियों के उत्थान के लिए ज्योतिबा ने जीवन पर्यन्त कार्य किया । उन्होंने इनके लिए विद्यालय स्थापित किए, शूद्रों को अपने विरूद्ध हो रहे अन्याय के विरूद्ध लड़ने के लिए तैयार किया ।''[17] निश्चय ही पारम्परिक समाज व्यवस्था को परिवर्तित कर दलितों की दशा

[16] कन्हैया लाल चंचरीक, ज्योतिबा फुले ।
[17] डॉ0 कुसुम मेघवाल, हिन्दी उपन्यासों में दलित वर्ग, पृ0 30

में सुधार की इच्छा रखने वाले ज्योतिबा फुले आगें आने वाले दलित चिन्तन के आदर्श बन गए । अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक 'हू वर शूद्राज' इन्ही महात्मा फुले की स्मृति में समर्पित की है और उन्हे दलितों का उन्नायक स्वीकारा है । ''आधुनिक भारत के महान शुद्र महात्मा ज्योतिबा फुले (1829–1890) की स्मृति मे, जिन्होंने निम्न वर्गीय हिन्दुओं की अन्तरात्मा को उच्च वर्ण के दलन के विरूद्व जगाया और इस मत का प्रतिपादन किया कि भारत के लिए विदेश शासन से मुक्ति का प्रश्न उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि सामाजिक प्रजातंत्र का प्रश्न है ।''[18]

निष्कर्श

भारतीय जाति व्यवस्था दलित–चेतना की जननी है क्योंकि इसी जाति–व्यवस्था के कारण उपजी त्रासदी ने दलितों को दलित और शोषित बनने को विवश किया । शोषण सहते–सहते जब 'दलित' की कमर टूटने लगी तो वह अकड़ कर सीधा खड़ा हो गया । शोषक को ललकारने लगा । महान चिन्तकों के दिशा निर्देशन में दलितों में चेतना एवं जागरण का प्रादुर्भाव हुआ । भारतीय संविधान में दलितों की समस्याएं दूर करने उनके जीवन स्तर को सुधारने तथा उन्हें सामाजिक न्याय दिलाकर मुख्य राष्ट्रीय जीवन – धारा में जोड़ने वाले अनेक प्रावधानों की व्यवस्था की गयी जिसके फलस्वरूप दलितजनों में नवीन चेतना और जागरण का संचार हुआ जो कि सामाजिक समानता एवं सामाजिक प्रजातन्त्र के लिए अति आवश्यक है ।

[18] डॉ0 अम्बेडकर, हू वर दि शूद्राज, पृ0 12

सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची

1. प्रज्ञा साहित्य, दलित चेतना विशेषांक
2. माता प्रसाद, दलित साहित्य में प्रमुख विधाएं
3. डॉ0 आनन्द वास्कर, हिन्दी साहित्य में दलित चेतना
4. अनीता सिंह, दलित चेतना और हिन्दी साहित्य
5. डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, हू वर दी शुद्राज
6. डॉ0 जर्नादन वाघमारे, दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि
7. डॉ0 एम0 फिरोजखान, दलित विमर्श और हम
8. डॉ0 ललिता कौशल, हिन्दी दलित साहित्य और चिन्तन
9. डॉ0 आनंद वास्कर : हिन्दी साहित्य में दलित चेतना
10. स्वामी दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश
11. एम0 पी0 त्यागी एवं आर0 के0 रस्तोगी, भारतीय राजनीतिक विचार, अध्याय–1
12. डॉ0 कुसुम मेघवाल, हिन्दी उपन्यासों में दलित वर्ग
13. कन्हैया लाल चंचरीक, ज्योतिबा फुल
14. डॉ0 कुसुम मेघवाल, हिन्दी उपन्यासों में दलित वर्ग
15. डॉ0 अम्बेडकर, हू वर दि शूद्राज